1 दान-बल

इस कविता में कवि ने दान का महत्त्व बताया है। प्रकृति का कार्य-व्यापार दान पर चलता है। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है। दान में अपना भी हित निहित होता है। समय आने पर सभी को समाप्त अथवा नष्ट होना ही है, सो क्यों न उससे पहले औरों के लिए उपयोगी अंग-उपांगों का दान करके मुक्ति भी पा ली जाए और श्रेय भी अर्जित कर लिया जाए?

जीवन का अभियान दान-बल से अजस्र चलता है,
उतनी बढ़ती ज्योति, स्नेह जितना अनल्प जलता है।
और दान में रोकर या हँसकर हम जो देते हैं,
अहंकारवश उसे स्वत्व का त्याग मान लेते हैं।

यह न स्वत्व का त्याग, दान तो जीवन का झरना है,
रखना उसको रोक मृत्यु के पहले ही मरना है।
किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं?
गिरने से उसको सँभाल क्यों रोक नहीं लेते हैं?

ऋतु के बाद फलों का रुकना डालों का सड़ना है,
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है।
देते तरु इसलिए कि रेशों में ना कीट समाएँ,
रहें डालियाँ स्वस्थ और फिर नए-नए फल आएँ।

सरिता देती वारि कि पाकर उसे सुपूरित वन हो,
बरसे मेघ, भरे फिर सरिता, उदित नया जीवन हो।
आत्मदान के साथ जगज्जीवन का ऋजु नाता है,
जो देता जितना बदले में उतना ही पाता है।

दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है,
एक रोज़ तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है।
बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते हैं,
ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको, वे देकर भी मरते हैं।

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेर ज़िले के सिमरिया गाँव में 30 सितंबर 1908 को हुआ था। 1952 में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। पद्मभूषण से अलंकृत किए गए। *संस्कृति के चार अध्याय* पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी और *उर्वशी* महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत हुए। दिनकर जी ओज के कवि माने जाते हैं। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं : *हुँकार, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र* और *परशुराम की प्रतीक्षा*। प्रस्तुत पाठ रश्मिरथी के चतुर्थ सर्ग की आरंभिक पंक्तियों से तैयार किया गया है।

अभ्यास—*for* S.A. *and* F.A.

S.A.1

संकलित मूल्यांकन के लिए
for Summative Assessment

शब्दार्थ

अभियान – मुहिम, कार्रवाई, व्यवस्थित आंदोलन; **अजस्र** – लगातार;
अनल्प – थोड़े का उलटा, अधिक; **स्वत्व** – अपना; **देय** – जो देने योग्य हो;
आत्मघात – स्वयं को मारना; **रेशों** – वनस्पतियों में पाया जानेवाला सूत जैसा इकहरा द्रव;
कीट –कीड़े-मकोड़े; **वारि** – जल, पानी; **सुपूरित** – अच्छी तरह भरा हुआ;
जगज्जीवन – संसार रूपी जीवन; **ऋजु** – सीधा;
प्रकृत – प्रकृति से उत्पन्न, प्रकृति के अनुरूप, स्वाभाविक; **सर्वस्व** – सब कुछ

कविता-बोध

मौखिक

प्रत्येक 1 अंक

1. हम दान को क्या मान लेते हैं ?
2. पेड़ पर फलों के रुक जाने से क्या होगा ?
3. नदी जल का दान क्यों करती है ? M.I.
4. मृत्यु से पहले व्यक्ति कब मरा माना जाता है ?

लिखित

अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्न Comprehension

सरिता देती वारि कि पाकर उसे सुपूरित वन हो,
बरसे मेघ, भरे फिर सरिता, उदित नया जीवन हो।
आत्मदान के साथ जगज्जीवन का ऋजु नाता है,
जो देता जितना बदले में उतना ही पाता है।

Skills/Learning on this Page: • **Word Power** • **Verbal Expression** – melodious singing • **S.A. – Comprehension**-reasoning, identification, M.I. • **जीवन-मूल्य** – समर्पण, बलिदान, उदारता, त्याग

1. सरिता और मेघ एक-दूसरे को क्या और कैसे देते हैं ? 2

2. 'आत्मदान के साथ जगज्जीवन का ऋजु नाता है' का भाव स्पष्ट कीजिए। 2

3. इन पंक्तियों में दान के महत्त्व को कैसे स्थापित किया गया है ? 1

लघुउत्तरीय प्रश्न Short Answer Questions

प्रत्येक 1 या 2 अंक

स्पष्ट कीजिए—

क. तरु फलों का त्याग क्यों कर देते हैं ?

ख. दान को जीवन का झरना क्यों कहा गया है ?

ग. जिन्हें ऋतु का ज्ञान नहीं उनका क्या होता है ?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न Long Answer Questions

प्रत्येक 3 अंक

1. दान में अहम कब और क्यों आ जाता है ?
2. कवि ने दान को 'जीवन का झरना' कैसे सिद्ध किया है ?
3. दान को जीवन का प्रकृत धर्म क्यों कहा गया है ?
4. **भाव स्पष्ट कीजिए—** *प्रत्येक 2 अंक*

   क. एक रोज़ तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है।

   ख. रहें डालियाँ स्वस्थ और फिर नए-नए फल आएँ।

5. कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। *4 अंक*

भाषा-सौंदर्य

1. यह कविता **तत्सम शब्दावली** प्रधान है। तत्सम अर्थात 'संस्कृत के शब्दों' से ओत-प्रोत कविता। जैसे — अजस्र, ज्योति, अनल्प, स्वत्व, सुपूरित, जगज्जीवन, ऋजु आदि। इसे संस्कृतनिष्ठ हिंदी की कविता कहा जा सकता है।

2. अलंकारों के विषय में पिछली कक्षाओं में पढ़ा जा चुका है। कविता में आए 'जगज्जीवन' शब्द पर ध्यान दें। इसमें **रूपक अलंकार** है। जब उपमेय और उपमान में एकरूपता दिखाई जाती है अथवा उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाता है, तब वहाँ रूपक अलंकार होता है। **उपमेय** -जिसकी उपमा की जाती है। **उपमान** — जिससे उपमेय की उपमा की जाती है।

Skills/Learning: • **S.A. – Comprehension** – short and long question-answer, identification, explanation, gist of poem, literary appreciation

'जगज्जीवन' में 'जग रूपी जीवन' अर्थात् जग के ऊपर जीवन का आरोप किया गया है अत: यहाँ रूपक अलंकार होगा।

3. कविता की अंतिम पंक्तियों को देखिए। पहली और दूसरी, तीसरी और चौथी - इसी प्रकार पूरी कविता के अंतिम वर्ण एक जैसे हैं। जैसे - है -- है, हैं -- हैं, हो -- हो -आदि। इस कारण कविता में लय-तुक उत्पन्न हो रही है। अंत में वर्णों की आवृत्ति होने के कारण इसे अंत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

व्याकरण-बोध

1. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए— *प्रत्येक 1 अंक*

क. मृत्यु — .....

ख. वृक्ष — .....

ग. स्वस्थ — .....

घ. सरिता — .....

ङ: वारि — .....

च. जगत — .....

छ. मनुज — .....

ज. अभियान — .....

झ. रोज़ — .....

ञ. वन — .....

2. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी कहा जाता है। जैसे—
'नव' शब्द का अर्थ 'नया' और 'नौ' दोनों हैं। प्रसंग से अर्थ को जाना जाता है। नीचे दिए गए अनेकार्थी शब्दों का अलग-अलग अर्थों में वाक्य-प्रयोग कीजिए—

प्रत्येक वाक्य के लिए 1 अंक

क. मत — .....

मत — .....

ख. पर — .....

पर — .....

ग. जग — .....

जग — .....

घ. फल — .....

फल — .....

ङ: मान — .....

मान — .....